गौरैया बॉक्स की बनावट

- गौरैया बॉक्स की लम्बाई लगभग 15 सेंटीमीटर होनी चाहिए।
- गौरैया बॉक्स की चौड़ाई लगभग 15 सेंटीमीटर होनी चाहिए।
- गौरैया बॉक्स की उँचाई लगभग 25 सेंटीमीटर होनी चहिए।
- गौरैया बॉक्स के छिद्र की उँचाई लगभग 16 सेंटीमीटर बॉक्स के तल में होनी चाहिए।
- गौरैया बॉक्स जमीन से 2 मीटर उँचाई पर लगाया जाना चाहिये।
  गौरैया बॉक्स का छिद्र 32 मिलीमीटर गोलाई का होना चाहिए। इससे छोटा होने पर गौरैया के प्रयोग योग्य नहीं रहेगा और बड़ा होने पर अन्य पक्षी प्रयोग में लेंगे।
- बक्से के निचले भाग में 5-6 छोटे-छोटे छेद (2 mm) कर दें ताकि हवा का प्रवाह रहे और तरल पदार्थ बह निकलें। यदि चाहें तो साईड का पल्ला कब्जे पर बनायें ताकि आवश्यकतानुसार बक्से को साफ किया जा सके। किन्तु यह सुनिश्चित करें कि पल्ला बहुत अच्छी तरह बंद रहे अन्यथा परभक्षी बक्से के अन्दर प्रवेश कर सकते हैं।
- गौरैया बॉक्स को नीचे दिये गये चित्र के अनुसार बनाना चाहिये।

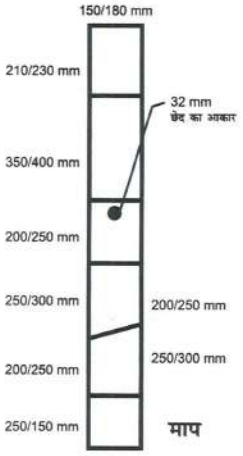

उपरोक्त विशीष्टीयाँ BNHS द्वारा निर्धारित की गई हैं। इनका पालन करते हुए, कम खर्च वाले सामानों का उपयोग कर इसका निर्माण रचनात्मक रूप से करना चाहिए।

बिहार सरकार

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्त्तन विभाग

हमारी नन्ही
और
प्यारी गौरैया

आईए! हम सब मिलकर
बिहार के राजकीय पक्षी
गौरैया
का संरक्षण करें!

गौरैया क्या है-

गौरैया (Passer domesticus) एक छोटी चिड़िया है, जिसके पंख अधिकतर काले या धूसर रंग के होते हैं। इसका सिर गोल, पूँछ छोटी व चोंच चौड़ी एवं नुकीली होती है। इसका मनुष्य के वास स्थानों से प्रबल सम्बन्ध रहा है।

गौरैया लुप्त होती जा रही है क्योंकि-

- गौरैया हमारे साथ रहना चाहती है परन्तु आजकल के आधुनिक घरों में घोंसले बनाने की जगह नहीं रहती है।
- गौरैया काकून, बाजरा, धान, पके हुए चावल के दाने इत्यादि खाती है। अत्याधुनिक शहरीकरण के कारण उसके प्राकृतिक भोजन के स्रोत समाप्त हो रहे हैं।
- प्राकृतिक परभक्षी जैसे बिल्लियाँ, कौए, चील और बाज इत्यादि भी गौरैया की मृत्यु का कारण होते हैं।
- छोटे पेड़ एवं झाड़ियाँ काटे जाने से भी इसके प्रजनन में बाधा होती है। गौरैया बबुल, कनेर, नींबू, अमरूद, अनार, मेंहदी, बाँस, बोतल ब्रश, चाँदनी इत्यादि पेड़ों को पसंद करती हैं।
- हजारों मोबाईल फोन के टावर शहरों व गाँवों में लगाये जा रहे हैं, जो कि गौरैया के लिये प्रमुख खतरा हैं। इलेक्ट्रोमैगनेटिक किरणें उनको उत्तेजित करती हैं व उनकी प्रजनन क्षमता को कम करती हैं।
- फसलों के उपर किटनाशक का छिड़काव करने से न केवल मनुष्यों को बल्कि गौरैया जैसे पक्षियों को भी इससे नुकसान होता है।

हम गौरैया को क्यों बचाएँ -

- गौरैया और हमारा बचपन से सम्बन्ध है। गौरैया वह चिड़िया है जिसके बारे में माँ ने सबसे पहले हमें बताया था।
- गौरैया घरों में मौजूद कीड़-मकोड़ों को भी खत्म करने में मदद करती हैं।
- गौरैया हमारे पर्यावरण की स्थिति को भी बताती है। गौरैया का कम होना हमारे पर्यावरण का खराब होने का भी संकेत है।
- गौरैया अपने बच्चों को उल्फा एवं कटवर्म खिलाती हैं। उल्फा एवं कटवर्म ऐसे कीट हैं जो हमारे फसलों को नुकसान भी पहुँचाते हैं।
- हम अपने घरों में बने घोंसलों का संरक्षण करें एवं गौरैया के लिए खाने व पानी की व्यवस्था करें।
- हम अपने बगीचे व घरों में गौरैया के रहने के लिए बॉक्स लगायें। यह बॉक्स लकड़ी का बन सकता है।
- हम शिक्षा के माध्यम से लोगों में इसके बचाव के लिए जागरूकता लाएं।
- हम 20 मार्च को विश्व गौरैया दिवस के रूप में प्रतिवर्ष धूमधाम से मनाएं।
- कीट-नाशकों के प्रयोग पर रोक लगायें।
- प्रजनन के समय अण्डों की सुरक्षा व दाने पानी की उचित व्यवस्था करें।